SHABDBRAHM E-ISSN: 3049 4230
VOLUME 1, ISSUE 2, OCTOBER 2025

लौहपुरुष सरदार पटेल : एकता के शिल्पीकार

डॉ. संगीता चौहान

प्राध्यापिका, हिंदी विभाग,

नलिनी अरविंद एंड टी. वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज,

वल्लभ विद्यानगर, आणंद, गुजरात

यही प्रसिद्ध लौह का पुरुष प्रबल
यही प्रसिद्ध शक्ति की शीला अटल
हिला जिसे सके कभी न शत्रु दल
पटेल पर स्वदेश को गुमान है ।

- 'सरदार' कविता (हरिवंश राय बच्चन)

हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि हरिवंश राय बच्चन ने उपर्युक्त पंक्तियों में अद्वितीय एवं अद्भुत शक्ति के धनी सरदार वल्लभभाई पटेल की महिमा का गान किया है ।

गुजरात राज्य के राज्यपाल एवं सरदार पटेल यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति रह चुके श्री सुंदरसिंह भंडारी ने अपने 1512/2000 के प्रवचन में कहा कि - "जब-जब कश्मीर का सवाल खड़ा होता है सरदार पटेल की याद आये बिना नहीं रहती । एक गलती हो गयी और उस गलती को आज तक देश भुगत रहा है । सरदार पटेल राष्ट्रभक्त थे, उन्होंने भारत के गृहमंत्री के रूप में सारे देश को एक जुट बांधने का प्रयत किया ।"(1)

पटेल जी का पूरा नाम वल्लभभाई पटेल था । वे गुजरात के एक साधारण किसान परिवार से थे, लेकिन उनकी इच्छाशक्ति लोहे सी मजबूत थी । उन्होंने कठिनाइयों के बीच वकालात की पढ़ाई की और लंदन जाकर बैरिस्टर बनने का सपना पूरा किया । 1913 में भारत लौटकर वे अहमदाबाद में वकील बने और जल्द ही स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े । गांधीजी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने असहयोग आंदोलन (1920) में भाग लिया और नमक सत्याग्रह (1930) में बड़ोदा सत्याग्रह का नेतृत्व किया ।

सरदार वल्लभभाई पटेल (31 अक्टूबर 1875 - 15 दिसंबर 1950) को भारत में "लौह पुरुष" (Iron Man of India) और "एकता के शिल्पी" कहा जाता है । स्वतंत्रता के बाद भारत को जिस तरह एक सूत्र में पिरोया, वह विश्व इतिहास में एक अनोखा और अद्भुत कार्य था ।

1947 में आजादी मिली, तब भारत में 565 से ज्यादा देसी रियासतें (Princely States) थीं । ये रियासतें स्वतंत्रता चाहती थीं और ब्रिटिश सरकार ने भी उन्हें भारत या पाकिस्तान में विलय के बजाय स्वतंत्र रहने का विकल्प दिया था । अगर ये रियासतें अलग रहतीं, तो आज का भारत "बाल्कन" जैसा बिखरा हुआ नक्शा होता ।

जूनागढ़ के नवाब ने पाकिस्तान में विलय कर दिया था, जबकि 99% आबादी हिंदू थी । सरदार ने जनता के दबाव और सैन्य घेरा डालकर जूनागढ़ को भारत में मिला लिया ।

हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय से इनकार कर दिया और रजाकारों की सेना से आतंक मचाया । 1948 में सरदार ने "ऑपरेशन पोलो" चलाकर मात्र 4 दिन में हैदराबाद को भारत में मिला लिया ।

इसके अलावा भोपाल, जोधपुर, जयपुर जैसी कई रियासतों को भी पटेल ने व्यक्तिगत रूप से मनाया । सरदार पटेल के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल था -1947 से 1950 तक का काल । देशी राज्यों का एकीकरण उनकी महत्तम उपलब्धि थी । डॉ. राजेन्द्रप्रसाद का यह कहना सार्थक है कि "यदि आज एक ऐसे भारत का अस्तित्व है, जिसके बारे में हम सोचते और बात करते हैं, तो इसका अधिकतर श्रेय सरदार पटेल को है । फिर भी हम उन्हें प्रायः भूल जाते हैं ।

जिस तरह बिखरे हुए भारत को एक राष्ट्र बनाया, वह चमत्कार सिर्फ और सिर्फ सरदार वल्लभभाई पटेल ने किया । इसलिए उन्हें सही मायनों में "भारत की एकता के शिल्पी" और "लौह पुरुष" कहा जाता है ।

लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल: एकता के शिल्पी

सरदार वल्लभभाई पटेल, जिन्हें 'लौह पुरुष' के नाम से जाना जाता है, भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख योद्धा और आधुनिक भारत के निर्माणकर्ता थे । उनका जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नडियाद में एक किसान परिवार में हुआ था । पटेल जी ने न केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ अंग्रेजों को ललकारा, बल्कि स्वतंत्र भारत को एक सूत्र में बांधने का भी अद्भुत कार्य किया ।

वे देश की एकता और अखंडता के प्रतीक हैं, जिन्होंने 562 रियासतों को भारतीय संघ में विलय कर एक मजबूत राष्ट्र की नींव रखी । "सरदार पटेल ने बोरसद सत्याग्रह का कुशलता से संचालन किया । उन्होंने बोरसद में आंदोलन का प्रधान कार्यालय स्थापित किया जिसके संचालक दरबार गोपालदास नियुक्त हुए । मोहनलाल पांड्या ने गाँवों के लिए विज्ञप्तियाँ और बुलेटिन निकालने का काम संभाला । समाज के सभी वर्गों-पाटीदारों, पाटणवाड़ियों और बोरैयों ने आंदोलन में खुलकर भाग लिया । रविशंकर महाराज का पाटणवाड़ियों और बोरैयों के ऊपर विशेष प्रभाव था । उन्होंने गाँव-गाँव घूमकर लोगों को सत्याग्रह के लिए तैयार किया । सरकार ने लोगों की जमीन-जायदाद और ढोर-डंगर कुर्क करने की कोशिश की पर लोगों की एकता के कारण सरकार का यह प्रयत्न सफल नहीं हुआ ।"(2)

सरदार पटेल स्वतंत्रता संग्राम के 'दाएं हाथ' थे । वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख नेता थे और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भूमिगत रहकर आंदोलन को संगठित किया । उनकी कठोरता और दृढ़ता ने उन्हें 'लौह पुरुष' का खिताब दिलाया । पटेल जी ने किसानों

के अधिकारों के लिए बारडोली सत्याग्रह (1928) का नेतृत्व किया, जहां उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत को झुकने पर मजबूर कर दिया। उनकी रणनीतिक चतुराई ने स्वतंत्रता आंदोलन को नई गति दी ।

एकता के शिल्पीकार : रियासतों का विलय

स्वतंत्रता के बाद भारत का सबसे बड़ा संकट रियासतों का विभाजन था । नेहरू जी प्रधानमंत्री बने, लेकिन पटेल जी को गृह मंत्रालय सौंपा गया। उन्होंने 'लौह नीति' अपनाई और कूटनीति, दबाव तथा आवश्यकता पड़ने पर सेना का सहारा लेकर 562 रियासतों को भारतीय संघ में मिला लिया । हैदराबाद, जूनागढ़ और कश्मीर जैसे मुश्किल मामलों को सुलझाया । यदि पटेल जी न होते, तो आज भारत कई टुकड़ों में बंटा होता ।

प्रधानमंत्री नेहरू ने भी कहा था, "सरदार पटेल ही भारत को एक रख सके । “सरदार पटेल गांधी युग की देन हैं । उनका जीवन गांधीजी के साँचे में ढला था । वे गांधीजी के सबसे विश्वस्त और निकटस्थ शिष्यों में से थे ।‘ गांधीजी के संपर्क में आने से पहले उन्हें साहबी ठाठ-बाट से रहना पसंद था । गांधीजी के प्रभाव से उनकी जीवनचर्या बिल्कुल बदल गई। उनकी पोशाक बहुत सादी थी । धोती, कुर्ता, कंधे पर शाल, पैरों में चप्पल यही उनका वेश था । उनके रहन-सहन को देखकर भी यह नहीं लगता था कि वे भारत के इतने ‘शक्तिशाली पुरुष हैं । उनके नई दिल्ली स्थित आवास 1, औरंगजेब रोड पर तड़क-भड़क नहीं थी । संसार के बड़े से बड़े लोग उनसे मिलने आते थे और उन्हें भारत के गृहमंत्री की सादगी पर आश्चर्य होता था ।”(3)

15 दिसंबर 1950 को उनका निधन हो गया, लेकिन उनकी विरासत अमर है । 2014 में गुजरात के केवड़िया में 182 मीटर ऊंची 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' उनकी स्मृति में बनाई गई, जो दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा है । हर साल 31 अक्टूबर को 'राष्ट्रीय एकता दिवस' मनाया जाता है । 2025 में उनकी 150वीं जयंती पर पूरे देश में 'सरदार@150 एकता यात्रा' और 'यूनिटी मार्च' जैसे कार्यक्रम आयोजित हुए, जहां लाखों लोगों ने उनकी एकता की भावना को नमन किया ।

सरदार पटेल ने सिखाया कि एकता ही राष्ट्र की शक्ति है । आज भी उनकी दूरदृष्टि हमें 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की ओर ले जाती है । श्री ननी ए. पलखीवाला के मतानुसार - “सरदार पटेल जीवन भर एक संयुक्त भारत की संभावनाओं को साकार करने में लगे रहे । वे इस तथ्य को कभी नहीं भुला पाये कि विभाजन मूलतः गलत था । उन्हें लगता था कि यह विभाजन इस वास्तविकता को नष्ट कर देगा कि हम एक और अविभाज्य हैं । “आप समुद्र या नदियों के पानी विभाजित नहीं कर सकते । जहां तक मुसलमानों का प्रश्न है, उनकी जड़ें, उनके पवित्र स्थान और उनके केंद्र यहीं हैं। मैं नहीं जानता कि पाकिस्तान में वे करेंगे क्या ?”(4)

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि साधारण से महानतम नेता बनने तक का सरदार पटेल का सफर संघर्षमय रहा है । अपने कार्यों से वे राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में हमें हमेशा याद रहेंगे । 31 अक्टूबर यानी उनकी जन्म जयंती के दिन को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है । यह उत्सव हमें विविधता में एकता एवं राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता का संदेश देता है ।

संदर्भ सूची :

1. सरदार : राष्ट्रीय संविधान के सर्जक, सं- रमेश एम. त्रिवेदी, चारुतर विद्यामंडल, वल्लभ विद्यानगर, प्र.सं. - 2002, पृ - 33
2. सरदार वल्लभभाई पटेल : व्यक्तित्व और विचार, विश्वप्रकाश गुप्त, मोहिनी गुप्ता, राधा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, प्र. सं. 1999, पृ - 29
3. वही, पृ - 163
4. सरदार पटेल तथा भारतीय मुसलमान, रफीक जकरिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं - 1998, प्रस्तावना से

SHABDBRAHM